डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 27.08.2020

व्याख्यान संख्या-46 (कुल सं. 82)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

तर झुरसी ऊपर गरी कज्जल जल छिरकाय।

पिय पाती बिन हीं लिखी बाँची बिरह बलाय।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग नायक द्वारा नायिका की बिना लिखी हुई चिट्ठी को भी उस पर प्रकट लक्षणों से ही समझ लिए जाने का है। वस्तुतः प्रोषितपतिका नायिका ने नायक के पास जो चिट्ठी भेजी है उसमें वह अपना दुख अत्यधिक विकल रहने के कारण पूरी तरह से नहीं लिख पायी है। उस समय वह विरह की चरम अवस्था में थी, इसलिए चिट्ठी लिखते समय उसके हाथ के ताप से कागज नीचे की ओर झुलस गया है और काजल मिले हुए आँसू के गिरने से ऊपर की ओर गल गया है। इन लक्षणों को देखकर नायक ने बिना लिखी हुई चिट्ठी से भी नायिका की विरह-व्यथा का अनुमान कर लिया है। यही बात एक सखी दूसरी सखी से कह रही है।

सखी कहती है कि नीचे की ओर कुछ-कुछ जली हुई और ऊपर की ओर गली हुई बिना लिखी हुई ऐसी चिट्ठी जिसपर काजल युक्त जल का छिड़काव दिखता है, देखते ही नायक ने विरह-व्यथा को पढ़ लिया अर्थात् उन चिह्नों से ही यह अनुमान कर लिया कि प्रिया विरह से व्यथित है।

प्रस्तुत दोहे में 'तर' का अर्थ नीचे है; 'झुरसी' का अर्थ झुलसी हुई है; 'गरी' का अर्थ गली हुई है; 'कज्जल जल छिरकाय' का तात्पर्य है कि चिट्ठी पर

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

लिखा हुआ तो कुछ नहीं है, परंतु आँखों से जो आँसू टपके हैं उसमें आँख में लगे हुए काजल भी मिले हुए हैं। उसकी बूँदें कागज पर गिरने से लगता है जैसे उस पर काजल मिश्रित जल छिड़क दिया गया हो।

प्रस्तुत दोहे का पूर्वार्द्ध अर्थात् पहली पूरी पंक्ति 'पाती' का विशेषण है। 'बिन हीं लिखी' यह वाक्यांश 'बिरह बलाय' का विशेषण है। 'पिय' शब्द 'बाँची' का तृतीयांत कर्ता है। तात्पर्य यह है कि 'बाँचने' का अर्थ है पढ़ लेना, उसे पढ़ने वाला कर्ता है 'पिय'। इसका वाक्य बनेगा 'पिय ने पढ़ लिया' अथवा 'पिय के द्वारा पढ़ा गया'। 'बिरह बलाय' शब्द इसी वाक्य का कर्म है। इसका वाक्य बनेगा 'पिय ने बिना लिखी हुई चिट्ठी से बिरह बलाय को पढ़ लिया'।

प्रस्तुत दोहे में चिह्न या लक्षण के द्वारा पदार्थ का ज्ञान प्राप्त होने के कारण 'अनुमान अलंकार' है; वहीं कारण के अभाव में भी कार्योत्पत्ति का चमत्कारपूर्ण वर्णन (अर्थात् पत्र लिखा हुआ नहीं है, फिर भी पढ़ लिया जाना संभव) होने के कारण विभावना अलंकार भी है। चूँकि समान वाक्यों से ही इस दोहे में इन दोनों अलंकारों की सिद्धि होती है, अतः इस दोहे में अनुमान और विभावना का संकर है।